

मूलाङ्काः २१+५१५			दशवैकालिक मूल-सूत्रस्य विषयानुक्रम			दीप-अनुक्रमाः५४०		
मूलांकः	अध्ययन	पृष्ठांकः	मूलांक	अध्ययन	पृष्ठांकः	मूलांक	अध्ययन	पृष्ठांकः
००१	१— द्रुमपुष्पिका	०५१	२२६	६— महाचारकथा	३९२	---	९/३- उद्देशक - ३	५१४
००६	२— श्रामण्यपूर्वकं	१७५	२९४	७— वाक्यशुद्धिः	४२५	---	९/४- उद्देशक - ४	५२१
०१७	३— क्षुल्लकाचारकथा	२१०	३५१	८— आचारप्रणिधी	४५८		१०--- सभिक्षुः	५२७
०३२	४— षड्जीवनिकाया	२५०	४१५	९— विनयसमाधिः	४८९		चूलिका	-----
०७६	५— पिन्डैषणा	३३२	---	९/१- उद्देशक - १	४९५		१— रतिवाक्यं	५४९
---	५/१- उद्देशक- १	३३६	---	९/२- उद्देशक - २	५०३		२— विविक्तचर्या	५६६
---	५/२ उद्देशक- २	३७४		-----			उपसंहार-निर्युक्तिः	५७८

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलितः..आगमसूत्र[४२],मूलसूत्र[३] दशवैकालिक मूलं एवं हरिभद्रसूरिविरचिता वृत्तिः